लेखनी उठाते ही बाल्यकाल की एक सत्य कथा का स्मरण हो आया..... तैरह वर्ष का बाबाराया हनुमान अपनी हथेली में तीन मंजिलों वाला फालके स्टूडियों उठाकर चांद के सामने से निकल रहा था |

उस के खिडकी के कांच से भी बडे चेहरों ने अंदर झांका | एक कतार में महादेव, मंदाकिनी, नीलकंठ और दो साल का प्रभाकर सो रहे थे | मॉ सरस्वतीबाई उसे लोरी गा कर सुला रही थी | चॉदनी अंदर आई और प्रभाकर के मुह पर अटखेलियाँ करने लगी | वह खिलखिलाया |

जब देखा कि प्रभाकर सो चुका है सरस्वतीबाई ने उसे आहिस्त से अपनी गोद से उतारा ... तीसरी मंजिल स्थिर इस बडे से हाल से उतरकर स्टूडियों के कुछ कमरें से गुजरी ....वार्ड रोब के मेकअप रुम के कमरें.

पहले लेबोर्टरी के रुम में आई लैम्प की मदद से फिल्म धोने और छापने के काम में खो गयी | अमूंडे के माप के फ्रेम लिये और फिल्म के फ़ीते रसायन कुण्ड से छप कर निकलने लगे ।

हाउ टु मेक फिल्मस की आर्काइवल फूटेजका फालके.....कुछ याद कर रहा है उसके पीछे रोशन दान से झांकती बाबाराया की बहर ऑखे झांक रही हैं

बाईं ओर देख फालके ने जैसे किसी को पुकारा , एक सबटाइटल आया "अजी! सुनती हो ? सरस्वती को लगा शायद उसे किसी ने पुकारा..... फालके ने जबाब की अपेक्षा न रखते हुए लिखना शुरु किया

"आज लेखनी उठाते ही अपनी युवा अवस्था की एक सत्य कथा का स्मरण हो आया
उन दिनों मैं बडोदा राज्य के एक नगर गोधरा में एक फोटों ग्राफी की एक छोटीसी दुकान चलाता था इसी सिलसिले में मेरा आसपास के छोटे-मोटे रजगडों में आना जान हुआ करता था
उन दिनों अंग्रेजों के बाजारो में संस्कृत की पुरानी पुस्तक पोथियों की बहुत मांग थी और मेरी स्वयं की !
इसी सिलसिले में एक मन्दिरों के उजडे भुख अथाह शहर में मेरा आगमन हुआ

२
बाबाराया ने नीचे झांका ! उसकी छाया श्वेत मन्दिरों के विरान नगर पर तैर रही थी

१८९६
एलकेमिस्टः

धुड्डिराज, कन्धे पर रायफलनुमा फोटोगन टांग टीले पर खडी. उजाड
किन्तु उस विरान महल नुमा हवेली का व्दार खोल अंदर प्रवेश हुआ चारों तरफ दीवारें चित्रित थीं धुड्डिराज उस भूल भुलैया में शास्त्री जी को पुकारने लगा

तहखाने के अंधेरे कमरें मे भीमकाय शास्त्रीजी तैलबत्तीयॉ, किमीयागिरी के उपकरणो की सहायता से सोना बनाने में मग्न थे। बीच बीच में किताब पढकर मंत्र बुदबुदाते धुड्डिराज जैसे ही पहुँचा, एक विस्फोट हुआ एक रंग बिरंगा कोहरा दीवारों की और बढने लगा त्रिप्रिन हो उठी या की उसका कोई भ्रम था ।शास्त्रीजी उसे देख डरे नही मानों की इस तरह अप्रत्याशित भूत प्रेतों की अचानक उपस्थिती उनके लिये साधारण थी

शास्त्रीजी: मैनें आपको पहचाना नहीं, कहिये क्या बात है
(धुड्डिराजने समय गवाये बिना शास्त्रीजी के चरण गदगद चुम लिए)

धुड्डिराज: धन्य भाग मेरे पंडितजी आपके दर्शन हुए ।अबतक सुना था आज.....

धुड्डिराज ने अपने कमरबंद से खुसा हुआ छोटा सा बटवा निकाला। उसमें से पॉच रुपयें निकालकर पंडितजी के चरणों में रखे।

शास्त्रीजी: क्या मतलब है ?

धुड्डिराज: आपसे कुछ जरुरी बातें करनी थीं ।

शास्त्रीजी: ये अपने पॉच रुपयें उठाइये और चलते बनिये। पॉच रुपयें में इस पंडितसे साला कोई भी कुछ नहीं उगलवा सकता .

धुड्डिराज: ये तो दक्षिणा मात्र है अपनी बात अर्ज करने के बाद अशर्फियों से सौदा करुॅगा.

शास्त्रीजी: सोनो की अशर्फियों ? यानी की मोहरें ।सोना तो में खुद बनाना चाहता हूँ.

एक तांबे के पात्र में अम्लकी बूंद टपक रही था । जांच कर देखा सोना नही बना था गूस्से से बर्तन उठाकर दीवार पर दे मारा ।

शास्त्रीजी: खैर भैया आपसे बातें कर लूँगां, क्या गरमी है ?

धुड्डिराज: मैने सुना है आपके पास संस्कृत की बहुत सारी पोथियाँ हैं .

शास्त्रीजी: जी हॉ, हैं तो सही,पर अब मैंने उन्हें !!!!!!!! बना दिया है ।कमबख्त घर-भर में फैले, लकडी के दरवाजे खोखले कर, इससे अच्छा है इन नामूराद किताबों को खाती रहे, क्या गरमी है ,चलिये.
लाल पीले कपडों में लपटे कागजों और किताबों का ठेर छत छू रहा था देखिए .

शास्त्रीजी: ये देखिए आपको विदया-सरस्वती का मसान आपके अक्षर पूरुषोत्तम का प्रकाश-जैसे ही दरवाजा खुला किताबों के जंगल में से एक चूहा धुड्डिराज के पैर पे चढ़ता हुआ उसके कन्धे पर चढ़ा.और फिर से लुप्त हो गया। धुड्डिराज अपना संतुलन खो बैठा। किताबें उसके सर पर आ गिर रही थी ।किताब के पहाड से निकलकर वो फिर अपने पैरों पर खडा हुआ. धूल झाडी. शास्त्री जोरों से हँस रहैं थे.

धुड्डिराज ने एक गठ्ठर खोला पोथियॉ बिखरी .फालके एक जैसे कुछ क्षण उन पन्नों और चित्रों में खो गया रोशनदान से गिरती रोशनी के सामने किताबों की स्थायी धूल झील मिलाने लगी.
किताबें टटोलता हुआ धुड्डिराज शास्त्रीजी ललचाने लगे जैसे कि उसे शास्त्रीजी कि दुखती नस का पहले से ही पता हो.

धुड्डिराज: विलायत से एक अंग्रेज आया है उसके पास एक किताब है, मैनें खुद अपनी आखों से देखा कि उसने अपनी जेब से शीशी निकाली और सिर्फ दो बूंद ताम्बे के बडे लोटे पर डाल दी। अपने नौकर से कहा कि अब लौटे को बैल पत्रों से मांझ दो मांझते ही करिश्मा हो गया। पूरा लौटा सोने जैसे चमचमा रहा था ।

फिर बोले ये सारा सोना अंग्रेज सरकार मूझसे खरीद लेती है. मेरी करोडों की दौलत विलायत में है मगर मुझे यहॉ से जाने के लिए कमसेकम पचास सोने की मोहरे चाहिए.
तो मैने कहा जो लौटा आपने अभी बनाया है, उसे बेच दीजिए, रुपया मिल जाएगा । वह बोले नहीं, रेजिडेंट बाबू ने इसाई मंत्र की कसम खिला रखी है ।सोना अंग्रेज सरकार ही ले सकती है।

मैंने कहा तो अंग्रेज सरकार से ही पैसा ले लीजिए । इस पर वो गोरा कहने लगा सोना यहाँ बताकर देता हूँ तो वे कलकत्ते के बडेलाट साहब को खत लिख कर बतलाते है, बडेलाट साहब विलायत में कम्पनी को। तब वह रुपया वहाँ भेज दिया जाता है। इस बिचारे को एक भी धेला नहीं मिलता क्योंकि ये शराब बहुत पीता है। इसलिए वह चाहता है उसकी किमियागीरी की किताब पचास दिनारों मे खरीद लै.
शास्त्रीजी चकराये यकीन नहीं आया वह व्यथित हो उठे ।

शास्त्रीजी: ऐसी किताब तो सिर्फ अरब जबान में होगी

धुड्डिराज: सही फरमाया

शास्त्रीजी: ये अंग्रेजसलतनत भले लूटले मगर क्या खा कर अंग्रेजी जबान पढ़ेगें

धुड्डिराज:इस गोरे का वल्द *english* नस्ल का है और माँ अरबी नस्ल की. इसाई होते हुए भी अपने बेटे को कलमापाक पढ़ाया। मेरा ख्याल है कि यह किताब भी उसकी वालिदाने ।
शास्त्रीजी उस किताबों को पाते के लिए बैचेन हो उठे लगमग हाँफते लगे जैसे कि.....

शास्त्रीजी: वह किताब आपने देखी है.

धुड्डिराज: आखोंसे, पच्चास दिनारों में किताब उस शराबी इंग्लीशमैन से खरीद सकते है

शास्त्रीजी: उल्लूका पट्ठा हो गया है जो ऐसी बेशकिमती चीज बेच रहा है.

धुड्डिराज: चूँकी नूस्खा उसे याद है इसलिए बैचारा तैयार हो गया है ।

शास्त्रीजी: पर पच्चास दिनार दूं कहाँ से ,हवेली बेच दूँगा तो रहूँगां कहाँ

धुड्डिराज किताबों की दुनिया से बाहर निकला, हाथ झाड क़र खडा हुआ, आवाज मैं एक चुनौती थी, सौदा मानो नया था .

शास्त्रीजी: ये किताबें आप मुझे बेच दीजिए पच्चास दिनारें आपको नकद दूंगा. या कितनी कीमंत लेंगे

धुड्डिराज: अजी कीमत का क्या, मै इन सालियों से कूत्ते का परवाता उठाकर न फेंकू इतनी नफरत हो गयी है मुझे आपके देवी देवताओं से। आपके मजहबसे दुनिया के तमाम मजहबों से नफरत है. बस एक बार सोना बना कर देखना चाहता हूं

धुड्डिराज: तो इनके लिए पच्चास मोहरें पेश करु

शास्त्रीजी: जी नहीं ५१ या १०१.मुझे शुध्द रकम चाहिये लेना हो तो लीजीए वर्ना दफा हो जाइये.

धुड्डिराज ने अशर्फियाँ गिनकर पेश कीं
३
पोथियो के बंडल लदके बंडल किश्तियों में लद चुके थे
मल्हा एक एक कर नांव खोलने लगे.शास्त्रीजी धुड्डिराज की पीठपर लदी बंदुक को उस्तुकता से देख रहे थे.

धुड्डिराज: आपका बहुत बहुत शुक्रिया इस मनुष्य रुपी ज्ञानचटौरे दीमक को आपने खुराडे जिंदगी सौप दी। वह पता मत गुमा दिजियेगा ऐसा न हो वह किताब किसी और को बेच दे.

शास्त्रीजी काफी देर से धुड्डिराज की पीठ पर लदी बंदुक को देख रहे थै। आखिर रहा नहीं गया।

शास्त्रीजी: जनाब ये बंदुक .....बडी शानदार दिखती है क्या शिकार भी खेलते है ?

धुड्डिराज: नहीं शास्त्रीजी, ये तस्वीरे खीचंने की बंदुक है उडती चिडिया का । दौडते घोडे की। घुमते आकाश की। भागते भूत की। पश्चिम की खोज है धुड्डिराज नौका पर चडने तत्पर था शास्त्रीजी ने टोका हवेली में गये और लौटकर आये तो उनके हाथ में कुछ जडी बूटी थी ।

शास्त्रीजी: रुको, इस जडी कौ खाने से आदमी शेर बनता है। इसके खाते पर मानव में। मै चाहता हूँ ज्यों ज्यों शेर मैं बदल रहा हूँ तुम इस बंदुक को बराबर तने रखना ।मै भी वो देख क्या सवार हो जाता है फिर मुझे ये वाली गोली चटा देना मै फिर से मनुष्य हो जाऊँगा लो पकडो, कितनी दूर रहूं

धुड्डिराज: आप मुझे मार कर रवा गये तो
शास्त्रीजी: बेटा तुम्हारे पास बंदूक है ।शेर बनने का बाद मुझे कैसे पता चलेगा कि ये नकली है या प्रयोग है, तुम्हारे सायंस की सौगंध, डरो मत, मैं हूँ न

शास्त्रीजीने गोली गटकी धीरे धीरे शेर में बदलने लगे। कुछ समय तक धुड्डिराज बंदुक ताने चित्र खीचंता रहा फिर जब शैर दहाडा और उसपर कुदा,

धुड्डिराज ने नौका चला दी शेर उछल कर पानी में कुदा कूछ पोथिया पानी गिर कर डुबने लगी.... फैलती स्याही के पानी मैं शेर तैरने लगा

४
उडते हुए बाबाराया की हथेली मैं रखा फालके स्टुडियो

धुड्डिराज गोविंद फालके की लेखनी रुकी हाल में सोते हुए परिवार में मंदाकीनी जैसे गप्प सुन खिलखिलाकर हँसी

सरस्वती: फालके के दरवाजे पर खडी थी जैसे पूछ रही थी ऐसा कैसे संभव है। गप्प है। क्या प्रमाण है। फालके की लेखनी फिर से चलने लगी

५
१८९६
गोधरा
"फालके फोटो एण्ड मैजिक"
पंडितके शेर में बदलने की तसवीर उभर रही थी ।डार्क रुम में बाहर ढोल नगाडो की आवाज जैसे कि शेर को शिकार के लिये घेरा जा रहा हो ।साथ में हाथियों के चिघांडने की और पेडो के गिरनेकी
तभी,कमला बदहवास भयभीत डार्क रुम का किवाड धकेल फालके के सिने से चिपक गई ।वह हाँफ रही थी ।

धुड्डिराज: क्या हुआ

कमला: चूहा

धुड्डिराज:तो क्या हुआ।

रोशनीके कारण तश्तरी के पानी में शास्त्रीजी का शेर मेंपरिवर्तित होता चित्र घूसर हो रहा था ।धुण्डिराज पलटा। तश्तरी पें फूंका - ठीक उसकी नाक के नीचे बदलते शेर की तस्वीर काली हो गयी ।

धुण्डिराजः सत्या नाश हो ।यही तो एक प्रूफ था। क्या जवाब दूगां साईन्टिक-फिड सभा को जानती हो तुमने किस प्रकार की भूल का। कुन्डीनहीं खटखटा सकती। तुम अपनी मौं के पास क्यों नहीं चली जाती

कमलाः क्या हम अपने देश नहीं लौट सकते.

धुण्डिराजः और वहाँ जाकर अपने पिता के सामान कथा किर्तन करूँ, नहीं ?

कमलाः तुम चित्रकार भी हो
धुण्डिराजः नहीं वहाँ मै हार चुका हूँ

कमलाः बम्बई जा सकते हैं हम वहा मैं अकेली नहीं हूँगी

धुण्डिराजःतुम जानती हो फोटोग्राफी के व्यवसाय के लिये मुझे रेल, शेर, मेले और राजा रजवाडो का आश्रय चाहिये। ये तीनों यहाँ उपलब्ध हैं ।काश मैं यह फोटोग्राफ एन्थोपोलोजी सोसायटी को दिखा सकता

धुण्डिराज का पारा जितनी तेजी से चढता उतनी जल्दी उतर भी जाता था.

६

एक राज महल वाली तस्वीर वाले परदे के सामने बैठे आदीवासियों का फोटो तैयार हुआ ।बत्तीकी ओर से आते मौलवीसाहब दिखे.

धुण्डिराजःआइए मौलवीसाहब आपके लिए मेरे पास कई परदे है अजमेरशरीफ, उडते घोडे, जलत की सैर। तशरिफ रखिये .

भौलवीसाहबः आपसे कुछ जरुरी बातें करनी थी.

धुण्डिराजःमुझसे जो खिदमत हो सके

कमला दरवाजे की ओर से सुनने लगी

मौलवीसाहबः आप किस मुल्क से तशरिफ लाये है

धुण्डिराजः त्रिम्बकेश्वर, नाशिक .

मौलवीसाहबः आप इन तस्वीरों के टोटके में कबसे हैं ?

धुण्डिराजःटोटका ?

मौलवीसाहबः मै खुद इन जिन जिद्वान की दुनियाँ से वास्ता रखता हूँ लेकिन अपने लोगों को उनके साये से बचा कर रखता हूँ ।ये शीशे की आँख आदमी की रुह जुदा कर उसे जिंदा लाशों की दुनिया में फेंक देती है। तुम अकसर बाहर रहते हा, मै नहीं चाहता की तुम्हारी गैर हाजरी में कोई कहर आ पडे। खुदा हाफिज.

कमला और धुण्डिराज पुकारते रहे किन्तु मौलवीसाहब ने पलटकर नहीं देखा ।कुछ दूर कुछ लोग उनका इंतजार कर रहे थे। वे सब

१३
सुनार की दुकान

१४
रात को वहीं चुहों की किटकिट

डार्करुम के छेद से झांका . मुषक मोम चाट रहा था. फिर तश्तरी में भरा घोल लपलपाती जीभ से चाटता रहा फिर वही नाक से सूनहरी मुछें फुटनें लगी फिर पेन्सिल के लैड की तरह टुटने लगती. पर इसबार सुनहरी सुईयाँ बिखरी नहीं, खुद-ब-खुद एक गठ्ठर में बन्ध गयी.

धुड्डिराज ने आहिस्ता से दरवाजा खोला. बिना मुडें हाथों को पीछे बंद किया. मुषक डरा नहीं वे एक दुसरे को कुछ देर देखते रहे ।.

मुषक ने फिर तश्तरी का पानी पिया, साँस फुलाई ,मूंछ की नोक से पिछलता सोना गणपती की एक छोटी सी प्रतिमां मे ढलने लगा।.मूर्ति अदभूत थी -- गौर से देखा शास्त्रीजी थे।.

अचानक घर के बाहर कुछ आहट हुई ।चुहा फालके के कन्धे पर कुदा।.फिर उसके कोटके अस्तर में घुसडगुम हो गया ।

१५
घर के बाहर गश्त लगी थी. वे अंदर आये पुछताछ की .कोई बीमार तो नहीं ? अफवाह थी नगर में प्लेग फैला है.

फोटोफ्रेमकी दुकान थी ।श्वेत श्याम चित्रों के सुनहरे रंगो से भरा था।. धुड्डिराज ने सोने के रंगो से सजा चित्र थैले से निकाला ।

१६

एक टैंट में कैन कैन वाली रंगीन पिक्चर चल रही थी। मुषक धुड्डिराज की जेब में बैठा। चमत्कारों के रहस्य पर प्रवचन देने लगा। ऑकेस्ट्रा साथ में बज रहा था।

चमत्कारों के नियम का परिचालन किसी भी व्यति द्वारा संभव है ,जो जानता है सूष्टी का सच प्रकाश है। एक सिध्द पुरुष प्रकाश अणुओंको किसी भी अभिव्यक्ती में बदल सकता है। प्रक्षेपन के वास्तविक रुप का निर्धारण योगी की अभीलाशा और उसकी इच्छा शक्तीपर निर्भर है जैसे कि स्वपन में उसके दीर्घ समय के मृत मित्र दूरवर्ती महादीप बालव्यवस्था के दूश्य फिर से प्रकट होते है, सूजनात्मक इच्छा शक्ती का प्रयोग करके विश्व के प्रकाशणूओ को किसी भी भल की सच्ची प्रार्थना को पूर्ण करने के लिये पूनः व्यवस्थित करना है। मैने माया के दु:खद द्वैत के पीछे अनन्त प्रकाश की अखंडता की स्पष्ट झांकी देखी है।

अचानक टेंट में पुलीस और प्लेग इंस्पेकटर घुसा, फिल्म रोक लोगो की तलाशी लेने लगी। जिनपर प्लेग रोग का शक था उनको अलग किये जाने लगे।

१७
चर्चके बाहर या मसजिद

उसने स्पष्ट और जोरदार स्वर में उपासको. की भीड पर पहले ही वाक्य में प्रहार किया "तुम पर एक संकट आया है, मेरे भाइयों! और भाइयों तुम इसके काबिल भी थे"

लोग हैराती से हक्के-बक्के रह गये, हैरानी बाहर बारिश में खडे लोंगो तक फैल गईं भाषण कला की एक चाल से प्रवचक ने जैसे एक घूसे की तरह अपने प्रवचन का सार उनके मूँह पर दे मारा था।

इतिहास में यह कहर जब पहलीबार आया, तब इसका इस्तेमाल खुदा के दूश्मनों को बरबाद करने के लिए किया गया था. फैरों ने खुदा की मशां के खिलाफ की लेकिन प्लेग ने उसे घुटने के बल झुकने को मजबूर कर दियाी। इतिहास के शुरु से ही खुदा का यह कहर अहंकारियों के गर्व को चूर करताा आया है. जिन्होने उसके खिलाफ अपने दिलों को सख्त कर लिया है इसबात पर अच्छी तरह गौर करो और अपने घुटनों पर बैठ जाओी.नेक लोगों को डरने की कोई जरुरत नहीं लेकीन गुनहगार काँपेंगे। क्योकी प्लेग खुदा का मसुल है और दुनिया फर्श पर खुदा बेरहमी से अनाज को तब तक पीटेगा जबतक दाने छिलको से अलग नहीं हो जाते।

इंसानों ने सोचा कि गुनाहों पर अफसोस जाहिर करना ही काफी है गुनाह करने में कोई कसर नहीं छोडी गयी। गुनाह के आगे हथियार डाल दा। बाकी काम खुदा के रहम से हो जायेगा। बहुत दिनों से खुदा रहम की निगाह से इस शहर को देखता रहा। लेकिन हमने खुदा से मूँह मोड लिया। खुदा ने थाक कर रोशनी हमसे छीन ली हम अन्धेरे में चल रहे है इस प्लेग के अंधेरे मै।

लाशों को दफनाने के लिये जिन्दा लोगों की तादाद कम पडेगी एक नेक फरिशता दिखाई देगा। जो शैतान के दूत जिसके के हाथ में शिकार करने का नेजा होगा- मकानों पर प्रहर करने का हुकुम दे रहा होगा। जिस घर पर नेजे के जितने प्रहार होते होगे।. उतनी ही लाशें वहासे निकलेंगी वंदूत फिरसे शिकार पर निकले है और हमाारी सडको पर तबाही मचा रहे है।.शैतान चमक रहा है।. वह तुम्हारी छतों पर मंडरा रहा है उसके दाऐं हाथ में तेजा है जो प्रहार करनें के लिए ऊपर उठा हुआ है। उसका बाया हाथ आपके मकानों में से कुछ मकानों की और बठा हुआ है मुमकिन है इसी सब उसकी उँगली आपके दरवाजे की और इशारा कर रही है ।लाल तैजा आपकी चौखटों को खटखटा रहा है और क्या पता प्लेग आपके घर में भी दाखिल होकर आपके सोने के कमरें में जाकर बैठा हो।. और आपके लैटने का इंतजार कर रही हो. इस रक्तपात की जमीन पै सच्चाई का बीज बोया जाएगा. इतवारी छोटी सी मुलाकतें खुदा की मोहब्बत की तेज भूख को शांत नहीं कर सकी.

क्या पता तुम्हारी मुकति इसी में हो। एक पल जिन्हें प्लेग की छूत नहीं लगी थी..... उन्होंने प्लेग से मरे लोगों की चादरें ओढकर मौत को दावत दी इस तरीके से मैं एक जल्द बाजी और गुस्थाखी नजर आती है.

लोग साथ साथ खडे थे पर एक दूसरे को छूने से बच रहे थे.फालके भीड से निकला- बाजार में मरे हुए चूहों कों हाथगाडी में भरा जा रहा थी। दीवारों पे पानी का छिडकाव।. मरीजों को अलग।. चारों तरफ एक दहशत।. अकडे हुए शरीर लाल आसमान में चीलें उड रही थी। आँखें :जैसे हर शख्स एक दूसरे का दुश्मन था ।

१८

मूषक एक आभूषण के पेटी के अंदर एक सुनहरें पलंग पर लेटा था ,चाभी के छेद से घुसकर ।पलंग की (छाया) ऊपर दिवार पर पड रही थी -जैसे कि परदा हो और बकसा जैसे कैमेरा । बॉकसकैमरा ।बकसे के बाहर की तस्वीर बकसे के अंदर उल्टी पड रही थीी। दूर जंगल था. जंगल के सामने रेल और(कमला) कमरे के अंदर खडी बाल बना रही थी। कभी कभी फ्रेमसे बाहर चली जाती थी। मूषक लेटा लेटा देख रहा था. फिर देखा दूर से फालके इधर की और भागकर आ रहा था- पीछे मानो कि कूत्ते लगे हो ।फिर कमला आई बकसा खोला मूषक बाहर उछला । कमला चीखी। फालके दौड कर अंदर घुसा, सामान समेटने लगा -भीड करीब आ चूकी थी फालके शास्त्रीजी को पुकारता रहा।
जब तक भीड उन्हें पा सकती वे शहर के पर कोटे सें बाहर निकल चूके थे। अब तक सारा शहर सोने से मण्डित हो चुका था

भीड घर का सामान तोडने फोडने लगे. कपडों को आग लगाई कि मूषक दिखा .....तत्काल पूर्वगेस स्वर्ण में बदला. शत्रू भयभीत चकाचौघ थे.सोना केशो के काले में बदला . सोने के दात .....
चित्रों पे चढा सोनेका रंग रंगमंच के कंगन बाज बंद मुडट.

फालके और कमला ने पीछे मुडकर देखा तो मंदिरों के स्वर्ण कलश भस्म हो रहे थे.

१९

फालके की लेखनी रुकी बाबाराया हनूमान उड रहा था हथेली में फालके स्टूडियो था बडे हाल में सब सो रहे थे केवल फालके के कमरेकी लाइट जली हूई.

बाबाराया ने नीचे घरटी पर नजर दौडाया.....नीचे का दुश्य मानों लकां दहन के किसी दूश्य का था.

२०

स्टीमइंजूतकी माप और घूआ आगकी भट्टीया, कोयले से भरी मालगाडिया कपास,गगनचूम्बी चिमनियों का धूआ असमान में चीले और गिद्द. लाशे सफेद कफन.

२१

शिवाजी जयंती या गणेश उस्तवके दुश्य.तिलक भाषण देते हुए

२२

बम्बई आकर, धुड्डिराज का होटल के कमरे में रहना कमला का बीमार पडना धुड्डिराजका डॉक्टर की तलाश में निकलना लैटकर होटल आना.

२३

कमरें के बाहर ताले का बदल जाना .होटल मैनेजर से शिकायत करना .उसका न पहचाना जाना पूलिस का आना कमरा बदल चुका है उसे पागल घोषित किया जाना
वहा से भागना

२४

वहम: फोर्ट के फाटक बंद कर दिये थे बिना परमिट के कोई अंदर नहीं जा सकता था.
धुड्डिराज कमला के वियोग में भटक रहा था.बार-बार होटल के तरफ जाता.

वह अपने चाचा के पूराने घर में रह रहा था.घर वाले शहर छोड कर भाग चुके थे ।
धुड्डिराज को लगा उसके अंदर जहर फैल चूका ह।. बार-बार अपनी कॉख,गर्दन,जाघों के बीच घाठों और गिटलियों को टटोलना.....

कमला के साथ बिताऐ क्षण उसके दिमाग में घूमने लगें